आभार

साहित्य को समाज का दर्पण माना गया है। साहित्य को पढ़ते हुए उसमें वर्णित व्यक्ति हमारे आस-पास दिख जाता है। साहित्य में वर्णित समाज हमारे चारों तरफ दिखाई देता है। समाज और साहित्य को समझने की जिज्ञासा मुझ में बचपन से ही थी। स्नातक व परास्नातक में हिन्दी साहित्य को गंभीरता से पढ़ने व समझने का अवसर मिला। यही से साहित्य को अधिक गहराई से समझने की जिज्ञासा हुई। हिंदी साहित्य में शोध कार्य हेतु जब मैंने अपना मन बनाया उस वक्त मैंने महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रोफेसर दीपेंद्रसिंह जाडेजा सर का संपर्क किया। उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं के बारे में बताया तथा हिंदी साहित्य में किस विषय में और किस विधा में शोध की आवश्यकता है यह भी बताया। मेरी रुचि के अनुसार शोध विषय चुनने के लिए कहा। इस संदर्भ में सर के साथ काफ़ी समय तक चर्चा हुई। मैंने सर से वार्तालाप करते हुए बताया कि मुझे हिंदी कविताएं बचपन से ही पढ़नी अच्छी लगती है। उस वक्त सर ने वर्तमान में हिंदी साहित्य के एक बड़े प्रतिष्ठित कवि का नाम सुझाया। उनका नाम जितेन्द्र श्रीवास्तव है जो वर्तमान में दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एवं अंतर्राष्ट्रीय विभाग के निर्देशक हैं। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव ने स्त्री जीवन पर आधारित अनेक कविताएं लिखी है। जाडेजा सर ने मुझे उनकी कविताओं को पढ़ने के लिए कहा। उनकी कविताओ को पढ़ने के बाद मैंने महसूस किया कि उनकी कविताओं में व्याप्त स्त्री जीवन की समस्याएं और उनके जीवन के उतार-चढ़ाव को कवि ने बखूबी अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। जो वर्तमान में प्रासंगिक है। कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की स्त्री संबंधित कविताएं और उनकी समस्याएं तथा अपने आसपास के सामाजिक जीवन में व्याप्त स्त्री जीवन की

समस्याओ को देखते हुए। मैंने कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव की स्त्री संबंधित कविताओं पर शोध कार्य करने का निश्चय किया। यही शोध कार्य की प्रेरक भाव भूमि है।

शोध प्रबंध एक साधना है। जो माता-पिता के आशीष भाई-बहनों और पत्नी के सहयोग, साहचर्य तथा उनके त्याग के बिना यह कार्य असंभव था। लेकिन हर पल उनका मेरे साथ खड़े रहना ही मेरी शक्ति है। और इस समर्पण का ही प्रतिफल यह शोध कार्य है। उनके त्याग और समर्पण के समक्ष 'आभार' शब्द बहुत बौना है। फिर भी मैं पूज्य माता-पिता एवं भाई-बहनों तथा पत्नी का सहृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

सरल एवं उदार, मौलिक चिंतन से परिपूर्ण, सहृदय परम आदरणीय शोध निर्देशक प्रो.दीपेंद्रसिंह जाडेजा सर के मार्गदर्शन, स्नेह, वात्सल्य एवं अनुशासन से यह शोध कार्य की साधना संपन्न हो सकी। इसके लिए मैं सर के प्रति आत्मीय कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। सर का कुशल मार्गदर्शन ही मेरी पूंजी है। सर का आत्मीय लगाव एवं सुझाव इस कार्य को करते रहने की निरंतर प्रेरणा देता रहा मुझे। जाडेजा सर का असीम स्नेह और आशीर्वाद मिलता रहा है और भविष्य में यह स्नेह एवं आशीर्वाद मिलता रहे ऐसी कामना करता हूं।

इसके साथ ही में आत्मीय आभार प्रकट करता हूं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो.जितेन्द्र श्रीवास्तव सर का। जिनकी कविताओं पर शोध कार्य करने का अवसर मुझे मिला। समय-समय पर शोध कार्य में आने वाले कई प्रश्नों का उन्होंने समाधान किया और मुझे अपने कविता संग्रह उपलब्ध करवाए तथा शोध कार्य में मेरा अच्छे से मार्गदर्शन किया। साथ ही में आलोचक और संपादक अरुण होता, मृत्युंजय पाण्डे, कमलेश्वर वर्मा और सुचिता वर्मा जी का भी आभार व्यक्त करता हूं। जिन्होंने जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं पर आलोचना ग्रंथ एवं चयनित काव्य संग्रह लिखे हैं जिससे मुझे शोध कार्य के दौरान काफी लाभ मिला। जिस से मेरा शोध कार्य सरल हो गया। "समकालीन

स्त्री विमर्श के आलोक में जितेन्द्र श्रीवास्तव की कविताओं में प्रतिबिंबित स्त्री जीवन का अध्ययन"। इस विषय में पूर्ववर्ती शोध कार्य अब तक नहीं हुआ। यह प्रथम मौलिक शोध कार्य है।

हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो.दक्षा मैडम का आभार व्यक्त करता हूं जिनके कार्यकाल के दौरान मेरे शोध कार्य के लिए पंजीकरण हुआ तथा वर्तमान में हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो.कल्पना गवली मैडम का आभार व्यक्त करता हूं जिनके कार्यकाल में मैं अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत करने जा रहा हूं। विभाग के अन्य गुरुजनों का समय-समय पर मार्गदर्शन एवं सहयोग मिलता रहा। अतः आदरणीय सभी गुरुजनों का भी मैं सहृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

यह शोध कार्य मित्रों के सहयोग के बिना संभव ही नहीं था। जीवन की विषम परिस्थितियों में साथ देने वाले प्रिय मित्र चेतन, रणजीत सिंह, जुनैद, अश्विन तथा विभाग के साथियों में हेमलता, डॉ.ईश्वर भाई, शिव भाई, सागर, अतुल, सोहिलभाई, विजयभाई का विशेष सहयोग मिलता रहा। साथ ही विभाग के अन्य साथियों का सहयोग भी मिलता रहा। इस सहयोग के लिए मैं सभी मित्रों के प्रति आत्मीय आभार प्रकट करता हूं। पुस्तक तथा पुस्तकालय के बिना शोध कार्य की परिकल्पना नहीं की जा सकती। शोध कार्य में पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतःमैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के पुस्तकालय हंसा मेहता के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। जहां से मुझे दुर्लभ शोध सामग्री प्राप्त हुई और मेरा शोध कार्य पूर्ण हो सका। इसके अतिरिक्त में उन सभी विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करता हूं। जिनकी कृतियों का किसी न किसी रूप में मैंने अपने इस शोध कार्य के लिए सहारा लिया। यह शोध कार्य महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के प्रांगण में पूर्ण हुआ। इसके लिए मैं विश्वविद्यालय एवं विश्वविद्यालय परिवार के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। अंततः मैं उन सभी व्यक्तियों के प्रति असीम आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहायता, प्रेरणा एवं संबल प्रदान

किया। जिनके आशीर्वाद एवं शुभेच्छाओ के कारण ही आज इस शोध यात्रा को उसके अंतिम पड़ाव तक पहुँचा सका हूँ।

वाघेला जितेन्द्र रतिलाल